चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	7-8-26		

दैनिक भास्कर

कुरुक्षेत्र में बनेगा 2000 हेक्टेयर का स्पेशल नेचुरल फार्मिंग क्लस्टर

रसायन-मुक्त खेती के लिए 40 हजार किसानों को दी जाएगी मास्टर ट्रेनिंग

भास्कर न्यूज | हिसार

प्रदेश के खेतों को केमिकल-मुक्त बनाने, किसानों की फसल लागत में कटौती करने के उद्देश्य से बड़ा अभियान शुरू हो रहा है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अपने प्रदेशव्यापी नेटवर्क के जरिए राज्य के 40 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती का व्यावहारिक प्रशिक्षण देने जा रहा है। केंद्र सरकार के 'राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन' के तहत एचएयू के सभी 14 कृषि विज्ञान केंद्र इस प्रशिक्षण अभियान की कमान संभालेंगे।

प्रो. बल्देव राज कॉम्बोज

विवि के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि लक्ष्य मिट्टी की उपजाऊ क्षमता (मृदा स्वास्थ्य) को वापस लौटाना, जहरीले रसायनों से मुक्ति दिलाना व बदलते मौसम (क्लाइमेट चेंज) के दौर में कृषि को अधिक सुरक्षित और टिकाऊ बनाना है। ट्रेनिंग के दौरान स्थानीय नस्ल की गाय के गोबर, गौमूत्र से बीजामृत, जीवामृत और घनजीवामृत बनाने की वैज्ञानिक विधि। मिट्टी में मित्र कीटों और सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या बढ़ाकर प्राकृतिक तरीके से जमीन को उपजाऊ बनाना। एक साथ कई फसलें (बहु-फसली मॉडल) उगाने की तकनीक, जिससे पानी की खपत घटे और आय बढ़े। इसी कड़ी में हरियाणा सरकार द्वारा कुरुक्षेत्र जिले में 2,000 हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती क्लस्टर तैयार किया जा रहा है।

चौपालों पर संवाद किया जाएगा

एचएयू के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. नरेश कौशिक ने बताया कि विशेषज्ञ खुद किसानों के सामने देसी इनपुट्स तैयार करवाएंगे व व्यावहारिक अभ्यास कराएंगे। गांव-गांव जाकर चौपालों व खेतों में नियमित संवाद स्थापित किया जाएगा। बुवाई से लेकर कटाई तक किसानों को तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	7.8.26	11	5

प्राकृतिक खेती को मिलेगा नया आयाम

प्रो. बीआर काम्बोज

हिसार। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 14 कृषि विज्ञान केन्द्र प्रदेशभर के लगभग 40 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत सरकार के राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत आयोजित किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान किसानों को प्राकृतिक खेती की वैज्ञानिक तकनीकों, जैविक आदानों के स्थानीय उत्पादन, मृदा जैव विविधता संरक्षण, लागत में कमी तथा टिकाऊ कृषि प्रणाली से संबंधित व्यावहारिक जानकारी दी जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	7-8-26	3	7-8

हरियाणा में प्राकृतिक खेती को मिलेगा नया आयाम : प्रो. बलदेव

जासं • हिसार : प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 14 कृषि विज्ञान केन्द्र प्रदेश भर के लगभग 40 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत सरकार के राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत आयोजित किया जाएगा। कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान किसानों को प्राकृतिक खेती की वैज्ञानिक तकनीकों, जैविक आदानों के स्थानीय उत्पादन, मृदा जैव विविधता संरक्षण, लागत में कमी तथा टिकाऊ कृषि प्रणाली से संबंधित व्यावहारिक जानकारी दी जाएगी। किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए तकनीकी मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराया जाएगा।

प्रो. बलदेव राज काम्बोज • जागरण

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	7.8.26		

प्रदेश में प्राकृतिक खेती को मिलेगा नया आयाम : प्रो. काम्बोज

हिसार, 6 अगस्त (विरेन्द्र वर्मा): प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 14 कृषि विज्ञान केन्द्र प्रदेशभर के लगभग 40 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत सरकार के राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत आयोजित किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान किसानों को प्राकृतिक खेती की वैज्ञानिक तकनीकों, जैविक आदानों के स्थानीय उत्पादन, मृदा जैव विविधता संरक्षण, लागत में कमी तथा टिकाऊ कृषि प्रणाली से संबंधित व्यावहारिक जानकारी दी जाएगी। साथ ही किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए आवश्यक तकनीकी मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती एक रसायन-मुक्त एवं स्थानीय संसाधनों पर आधारित कृषि प्रणाली है, जिसमें स्थानीय नस्ल की गाय, बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत, प्राकृतिक मल्चिंग, बहु-फसली प्रणाली तथा पारंपरिक बीजों का उपयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य मृदा स्वास्थ्य को बेहतर बनाना, उत्पादन लागत कम करना तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति खेती को अधिक लचीला बनाना है। कुलपति ने बताया कि हरित क्रांति ने उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन वर्तमान समय में टिकाऊ एवं जलवायु-अनुकूल खेती की आवश्यकता है। प्राकृतिक खेती केवल खेती की तकनीक नहीं, बल्कि भूमि, जल, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के संरक्षण का व्यापक अभियान है। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के माध्यम से किसानों तक वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक तकनीकों को प्रभावी ढंग से पहुंचाकर प्राकृतिक खेती को जन-आंदोलन का स्वरूप दिया जाएगा।